प्राचीन भारत

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501

Web: www.drishtiias.com
E-mail : drishtiacademy@gmail.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिए निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत *(Sources of Ancient Indian History)*

इतिहासकार एक वैज्ञानिक की भाँति उपलब्ध सामग्री की समीक्षा करके अतीत का सही चित्रण करने का प्रयास करता है। उसके लिये साहित्यिक सामग्री, पुरातात्विक साक्ष्य और विदेशी यात्रियों के वर्णन सभी का महत्त्व है। प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिये पूर्णत: शुद्ध ऐतिहासिक सामग्री विदेशों की अपेक्षा अल्प मात्रा में उपलब्ध है। यद्यपि भारत में यूनान के हेरोडोटस या रोम के लिवी जैसे इतिहासकार नहीं हुए, अत: कुछ पाश्चात्य विद्वानों की यह मानसिक धारणा बन गई थी कि भारतीयों को इतिहास की समझ ही नहीं थी। लेकिन, ऐसी धारणा बनाना भारी भूल होगी। वस्तुत: प्राचीन भारतीय इतिहास की संकल्पना आधुनिक इतिहासकारों की संकल्पना से पूर्णत: अलग थी। वर्तमान इतिहासकार ऐतिहासिक घटनाओं में कारण-कार्य संबंध स्थापित करने का प्रयास करते हैं लेकिन प्राचीन इतिहासकार केवल उन घटनाओं या तथ्यों का वर्णन करता था जिनमें आम जनमानस को कुछ सीखने को मिल सके। महाभारत में इतिहास की जो संकल्पना दी गई है उससे भारतीयों की इतिहास विषयक संकल्पना उद्‌भाषित होती है। महाभारत के अनुसार ऐसी प्राचीन लोकप्रिय कथा जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की व्यावहारिक शिक्षा मिल सके 'इतिहास' कहलाती है। प्राचीन युग में भारतीय, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक समझते थे। इसीलिये प्राचीन भारत का इतिहास राजनीतिक कम और सांस्कृतिक अधिक है। भारतीय इतिहासकारों का दृष्टिकोण पूर्णतया धर्मपरक था, किन्तु धर्म के अतिरिक्त अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कारण थे जिन्होंने भारत में अनेक आंदोलनों, संस्थाओं और विचारधाराओं को जन्म दिया। अत: भारतीय इतिहास का सार्वभौमिक स्वरूप जानने के लिये इन तथ्यों का अध्ययन करना आवश्यक है।

आधुनिक इतिहासकारों ने इतिहास में केवल राजनीतिक तथ्यों का वर्णन करना ही अपना कर्तव्य नहीं समझा बल्कि उनके वर्णन में आम जनमानस भी उतना ही महत्त्व रखते हैं जितना कि सम्राटों अथवा साम्राज्यों के उत्थान और पतन। वह उन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं बौद्धिक परिवर्तनों का विश्लेषण एवं अध्ययन करता है, जिनके द्वारा मनुष्य उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके अपने जीवनकाल को पूर्व की अपेक्षा अधिक सुखमय बनाने का प्रयत्न करता है। अत: प्रसिद्ध इतिहासकार कोसांबी के अनुसार ''उत्पादन के साधनों और उनके पारस्परिक संबंधों का तिथि क्रमानुसार अध्ययन करने से ही विकास के कालक्रम की विस्तृत जानकारी मिल सकती है।'' उनके अनुसार इसके आधार पर हम यह जान सकते हैं कि जनसाधारण किस प्रकार अपना जीवन-यापन करते थे।

भारतीय इतिहास के काल को तीन भागों में बाँटकर देखा जा सकता है। वह काल जिसके लिये कोई लिखित साधन उपलब्ध नहीं है और जिसमें मनुष्य का जीवन अपेक्षाकृत पूर्णत: सभ्य नहीं था, 'प्रागैतिहासिक काल' कहलाता है। इतिहासकार उस काल को 'ऐतिहासिक काल' का नाम देते हैं जिसके लिये लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं और जिसमें मनुष्य सभ्य बन गया था। प्राचीन भारतीय इतिहास में लिखित साधन उपलब्ध तो हैं लेकिन वे अस्पष्ट और गूढ़ लिपि में हैं जिनका अर्थ निकालना कठिन है। इस काल को भारतीय इतिहासकार आद्य ऐतिहासिक काल का इतिहास कहते हैं। सैंधव संस्कृति की गणना 'आद्य ऐतिहासिक काल' के अन्तर्गत की जाती है। इसी आधार पर हड़प्पा संस्कृति से पूर्व का भारतीय इतिहास 'प्रागैतिहासिक' और लगभग ईसा पूर्व 600 के बाद का इतिहास 'ऐतिहासिक काल' कहलाता है क्योंकि भारत में प्राचीनतम लिखित साक्ष्य अशोक के अभिलेख हैं जिनका काल ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी है और इस भाषा के विकास में भी लगभग 300 वर्ष लगे होंगे।

प्रागैतिहासिक काल का इतिहास लिखते समय इतिहासकार को पूर्णतया पुरातात्विक साक्ष्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। आद्य इतिहास लिखते समय वह पुरातात्विक एवं साहित्यिक दोनों प्रकार के साधनों का उपयोग करता है तथा इतिहास लिखते समय वह इन दोनों साधनों के अतिरिक्त विदेशी लेखकों के वर्णनों का प्रयोग करता है। विदेशी यात्रियों के वर्णन भी साहित्यिक साधन हैं लेकिन उनकी उपयोगिता के विस्तृत वर्णन की आवश्यकता के कारण उनका वर्णन अलग शीर्षक के अंतर्गत किया गया है। इन सभी ऐतिहासिक साक्ष्यों का उपयोग करके इतिहासकार काल विशेष का ठीक-ठीक चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

अत: हम सुविधा के लिये भारतीय इतिहास को जानने के साधनों को तीन शीर्षकों में रख सकते हैं–

- पुरातत्त्व-संबंधी साक्ष्य।
- साहित्यिक साक्ष्य।
- विदेशी यात्रियों के विवरण।

ऐतिहासिक स्त्रोतों का वर्गीकरण *(Classification of Sources)*

पुरातात्विक स्त्रोत *(Archaeological Sources)*

पुरातात्विक स्त्रोतों में निम्नांकित शामिल हैं:

1. **अभिलेख (Records):** पुरातात्विक साक्ष्यों के अंतर्गत सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साक्ष्य अभिलेख हैं। प्राचीन भारत के अधिकतर अभिलेख पत्थरों या धातु की पट्टिकाओं पर खुदे मिले हैं, अत: उनमें साहित्यिक साक्ष्य की भाँति परिवर्तन करना असंभव था। हालाँकि सभी उत्कीर्ण अभिलेखों पर उनकी तिथि अंकित नहीं है, फिर भी अक्षरों की बनावट के आधार पर उनका समय मोटे तौर पर निर्धारित हो जाता है। सबसे प्राचीन अभिलेखों में मध्य एशिया के बोगज़कोई से प्राप्त अभिलेख हैं जिन पर वैदिक देवता मित्र, वरुण, इन्द्र और नासत्य के नाम मिलते हैं। ये लगभग 1400 ई॰ पू॰ के हैं तथा इनसे ऋग्वेद की तिथि ज्ञात करने में सहायता मिलती है। भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक के हैं। केवल मास्की तथा गुर्जरा (मध्य प्रदेश) से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है तथा अशोक के अन्य अभिलेखों में उसे देवताओं का प्रिय, 'प्रियदर्शी राजा' कहा गया है। इन्हीं अभिलेखों से अशोक के धर्म और राजस्व के आदर्श पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। अशोक के अभिलेख ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक तथा अरामाइक लिपि में उत्कीर्ण हैं। ब्राह्मी लिपि को सबसे पहले 1837 ई॰ में जेम्स प्रिंसेप नामक विद्वान ने पढ़ा था।

अशोक के अभिलेख सरकारी एवं निजी दोनों तरह के हैं। सरकारी अभिलेख या तो राजकवियों ने लिखे जो प्रशस्तियाँ हैं या भूमि-अनुदान पत्र। प्रशस्तियों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अभिलेख समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख है जिसमें समुद्रगुप्त की विजयों और नीतियों का पूर्ण विवेचन मिलता है। इसी तरह राजा भोज की ग्वालियर प्रशस्ति में इस शासक की उपलब्धियों का वर्णन है। इसी तरह के अभिलेखों के अन्य उदाहरण कलिंगराज खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख, गौतमी बलश्री का नासिक अभिलेख, रूद्रदामन का गिरनार शिलालेख, बंगाल के शासक विजयसेन का देवपाड़ा अभिलेख, स्कंदगुप्त का भितरी स्तंभ लेख, जूनागढ़ शिलालेख और चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल अभिलेख हैं। कुछ अभिलेख पाषाण या स्तंभों पर खुदे हैं तथा उनके प्राप्ति स्थलों में उस शासक के राज्य की सीमाओं का भी अनुमान लगाया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप अशोक के अभिलेखों से उसके साम्राज्य विस्तार की जानकारी प्राप्त होती है। भूमि अनुदान पत्र ज़्यादातर विश्वसनीय नहीं हैं, क्योंकि राजकवियों ने इन प्रशस्तियों और अनुदान पत्रों पर अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है जो संभव नहीं है। ये अनुदान पत्र मुख्यत: ताँबे की चादरों पर उत्कीर्ण हैं। इन अनुदान पत्रों में भूमि खंडों की सीमाओं के साथ उस समय का वर्णन मिलता है, जब वे भूमिखंड दान में दिये गए।

अभिलेख	शासक	विषय
हाथी गुम्फा अभिलेख	खारवेल	उसके शासनकाल की घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण
जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख	रुद्रदामन	इसकी विजयों एवं व्यक्तित्व का विवरण
नासिक अभिलेख	गौतमी बलश्री	सातवाहनकालीन घटनाओं का विवरण
प्रयाग स्तम्भलेख	समुद्रगुप्त	उसकी विजयों एवं नीतियों का वर्णन
ग्वालियर अभिलेख	भोज प्रतिहार	गुर्जर प्रतिहार शासकों के विषय में जानकारी
मन्दसौर अभिलेख	मालवा नरेश यशोवर्मन	सैनिक उपलब्धियों का वर्णन
ऐहोल अभिलेख	पुलकेशिन द्वितीय	हर्ष एवं पुलकेशिन-II के युद्ध का विवरण

वस्तुत: निजी अभिलेख मंदिरों में या मूर्तियों पर उत्कीर्ण हैं। इन पर जो तिथियाँ उत्कीर्ण हैं, उनसे इन मंदिरों के निर्माण का समय ज्ञात होता है। इस प्रकार इन अभिलेखों से मूर्ति-कला और वास्तुकला के विकास पर विस्तृत प्रकाश पड़ता है और तत्कालीन धार्मिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है और इनसे भाषाओं के ज्ञान पर भी प्रकाश पड़ता है। उदाहरण के लिये गुप्तकाल से पहले के अधिकतर अभिलेख प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध हैं और उनमें ब्राह्मणेत्तर धार्मिक समुदायों, जैसे कि जैन धर्म और बौद्ध धर्म का उल्लेख है। गुप्त और गुप्तोत्तर काल के अधिकतर अभिलेख संस्कृत भाषा में हैं और उनमें ब्राह्मण धर्म का विशेष उल्लेख है। निजी अभिलेखों से तत्कालीन राजनीतिक स्थिति पर भी प्रकाश पड़ता है क्योंकि उनमें उस समय के अधिकतर शासकों का भी उल्लेख है तथा इनमें उच्च अधिकारियों के पदों एवं तत्कालीन कर (Tax) आदि का भी उल्लेख है। दक्षिण भारत के पल्लव, चालुक्य, राष्ट्रकूट, पांड्य और चोलवंशों का इतिहास लिखने में इन शासकों के अभिलेख बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

विदेशों से प्राप्त कुछ अभिलेखों से भी भारतीय इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। एशिया माइनर में बोगज़कोई नामक स्थान पर लगभग ईसा पूर्व 1400 का समझौता पत्र अभिलेख मिला है। इसमें वैदिक देवताओं के नाम मिलते हैं। इससे ज्ञात होता है कि वैदिक आर्यों के पूर्वज एशिया माइनर में भी रहते थे। पर्सीपोलित और बेहिस्तून अभिलेखों से ज्ञात होता है कि ईरानी सम्राट दारा प्रथम ने सिंधु नदी की घाटी पर अधिकार कर लिया था।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि 'प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास' लेखन में भारतीय एवं विदेशी अभिलेख सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

2. **स्मारक और भवन (Monuments and Buildings):** प्राचीन काल में भारत में भारी संख्या में भवनों का निर्माण हुआ। इन भवनों के अधिकांश अवशेष संपूर्ण देश में बिखरे अनेकानेक टीलों के नीचे दबे हुए हैं। महलों और मंदिरों की शैली से वास्तुकला के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ा है। उत्तर भारत के मंदिरों की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं तथा उनकी कला की शैली 'नागर शैली' कहलाती है एवं दक्षिण भारत के मंदिरों की कला शैली 'द्रविड़ शैली' कहलाती है। जिन मंदिरों के निर्माण पर नागर शैली एवं द्रविड़ शैली दोनों का प्रभाव पड़ा है, वह 'बेसर शैली' कहलाती है। मंदिरों, स्तूपों और विहारों से तत्कालीन धार्मिक विश्वासों पर प्रकाश पड़ता है। दक्षिण-पूर्वी एशिया और मध्य एशिया में जो मंदिरों, स्मारकों और स्तूपों के अवशेष प्राप्त हुए हैं उनसे भारतीय संस्कृति के प्रसार पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ा है। जावा का प्रसिद्ध स्मारक 'बोरो बुदूर' इस बात का प्रमाण है कि 9वीं शताब्दी में वहाँ महायान बौद्ध धर्म अतिलोकप्रिय हो गया था। इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि भारत के वैदेशिक संबंध किस प्रकार के थे।
3. **सिक्के (Coins):** पुरातात्विक साक्ष्यों में सिक्कों का विशेष स्थान है। सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र (न्यूमिस्मेटिक्स) कहते हैं। वस्तुत: आजकल की तरह प्राचीन भारत में कागज़ी मुद्रा का प्रचलन नहीं था। परंतु धातु मुद्रा (सिक्का) चलती थी। हड़प्पा काल में धातु मुद्रा की जगह मुहरों और मनकों का प्रचलन था जिससे व्यापार प्रणाली संचालित होती थी। वस्तुत: ताँबे, चाँदी, सोने और सीसे के सिक्कों के साँचे बड़ी संख्या में मिले हैं। इनमें से अधिकांश साँचे कुषाण काल के प्राप्त हुए हैं। गुप्तोत्तर काल में ये साँचे लगभग लुप्त हो गए।

   प्राचीन भारत में आधुनिक बैंकिंग प्रणाली प्रचलित नहीं थी, इसीलिये लोग अपने धन अर्थात् सिक्के मिट्टी और काँसे के बर्तनों में रखकर ज़मीन के अंदर या ऐसी जगह रखते थे, जहाँ पर वे सुरक्षित रह सकें एवं इनका उपयोग आर्थिक संकट या विपत्ति के समय करते थे। प्राचीनतम सिक्कों पर अनेक चिह्न उत्कीर्ण हैं। उन पर किसी प्रकार के लेख नहीं हैं। ये सिक्के 'आहत सिक्के' कहलाते हैं। इन पर जो चिह्न उत्कीर्ण हैं वे पूर्णत: स्पष्ट नहीं हैं। इन सिक्कों को राजाओं के अतिरिक्त संभवत: व्यापारियों, व्यापारिक श्रेणियों और नगर-निगमों ने चालू किया था। यद्यपि, इन सिक्कों से इतिहासकारों को कोई विशेष सहायता नहीं मिली है, लेकिन जब उत्तर-पश्चिम भारत पर बैक्ट्रिया के हिंद-यूनानी शासकों ने अधिकार कर लिया और लेख वाले सिक्के चलाए तो भारतीय शासक भी लेख वाले सिक्के चलाने लगे। अधिकतर शासक इन सिक्कों पर अपनी आकृति उत्कीर्ण करवाते थे। अत: ये सिक्के प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास लिखने में बहुत उपयोगी सिद्ध हुए। उदाहरणस्वरूप यूनान और रोम के इतिहासकारों ने हिन्द यूनानी शासकों का उल्लेख किया है। किन्तु, इनके सिक्कों के आधार पर इनके राज्यकाल का पूरा इतिहास लिखना संभव न हो सका। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भारत के इतिहास को जानने के लिये तत्कालीन सिक्के बहुत कम उपयोगी सिद्ध हुए हैं क्योंकि हर्ष जैसे प्रसिद्ध शासक एवं चालुक्य, राष्ट्रकूट, प्रतिहार और पल्लव वंश के शासकों के बहुत कम सिक्के मिले हैं।
4. **मूर्तियाँ (Sculptures):** प्राचीन भारतीय इतिहास में कुषाणों, गुप्त शासकों और गुप्तोत्तर काल में जो मूर्तियाँ बनाई गईं उनसे जनसाधारण की धार्मिक आस्थाओं और मूर्तिकला के विकास पर प्रकाश पड़ता है। कुषाणकालीन मूर्तियों पर वैदेशिक प्रभाव स्पष्टत: दिखाई पड़ता है। गुप्तकालीन मूर्तिकला में अंतरात्मा तथा मुखाकृति में जो सामंजस्य है वह अन्य किसी भी काल की कला में नहीं प्राप्त होता। गुप्तोत्तर काल की कला में सांकेतिकता अधिक मिलती है जिसे केवल वही जान सकता है जो कला में निपुण है। प्राचीन भारत की मूर्तिकला से जनसाधारण के जीवन पर भी पर्याप्त प्रकाश पड़ा है। भरहुत, बोधगया, साँची और अमरावती की मूर्तिकला में जनसाधारण के जीवन की अति सजीव झलक मिलती है।
5. **चित्रकला (Painting):** अजंता के चित्रों में मनोभावों की सुंदर झलक मिलती है। जैसे–माता और शिशु तथा 'मरणासन्न राजकुमारी' जैसे चित्रों का सुंदर चित्रण मिलता है। चित्रकला से हमें तत्कालीन जीवन की झलक देखने को मिलती है।

साहित्यिक स्त्रोत *(Literary Sources)*

साहित्यिक साक्ष्य के अंतर्गत साहित्यिक ग्रंथों से प्राप्त सामग्रियों का अध्ययन किया जाता है। इन साहित्यिक साक्ष्यों को हम दो भागों में बाँटते हैं– 1 धार्मिक साहित्य तथा 2 लौकिक साहित्य।

धार्मिक साहित्य में ब्राह्मण तथा ब्राह्मणेतर ग्रंथ आते हैं। पुनः ब्राह्मण ग्रंथों में वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराण तथा स्मृतिग्रंथ आते हैं, जबकि ब्राह्मणेतर ग्रंथों में बौद्ध तथा जैन साहित्य का उल्लेख किया जा सकता है। इसी तरह, लौकिक साहित्य में ऐतिहासिक ग्रंथ, जीवनियाँ, कल्पना-प्रधान तथा गल्प साहित्य आते हैं।

प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ *(Prominent Literary Marks)*

	रचना	रचनाकार	विशेष तथ्य
1.	अष्टाध्यायी	पाणिनि	व्याकरण ग्रंथ
2.	महाभाष्य (अष्टाध्यायी पर टीका)	पतंजलि	पुष्यमित्र शुंग के विषय में जानकारी मिलती है
3.	निरूक्त	यास्क	वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति का विवेचन है एवं छंद शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र का उल्लेख
4.	मुद्राराक्षस	विशाखदत्त	मौर्य काल
5.	परिशिष्ट पर्व	हेमचंद्र	मौर्य काल (चंद्रगुप्त)
6.	समरादित्यकथा, कथाकोश	हरिभद्र सूरी	जैन धर्म
7.	कुवलयमाला	उद्योतन सूरी	
8.	आदि पुराण	जिनसेन	
9.	उत्तर पुराण	गुणभद्र	
10.	कथासरित्सागर	सोमदेव	मौर्य काल
11.	वृहतकथामंजरी	क्षेमेन्द्र	मौर्य काल
12.	अर्थशास्त्र	कौटिल्य/विष्णुगुप्त	
13.	नीतिसार	कामंदक	गुप्तकालीन राज्यतंत्र पर कुछ प्रकाश पड़ता है
14.	नीतिवाक्यामृत	सोमदेव सूरि	गुप्तकालीन राज्यतंत्र पर कुछ प्रकाश पड़ता है
15.	मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	शुंगवंश के बारे में जानकारी
16.	रघुवंशम्	कालिदास	समुद्रगुप्त की दिग्विजय
17.	मृच्छकटिकम्	शूद्रक	गुप्तकालीन समाज का वर्णन
18.	दशकुमार चरित	दण्डी	गुप्तकालीन समाज का वर्णन
19.	हर्ष चरित	बाणभट्ट	हर्ष की उपलब्धियों का वर्णन
20.	गौड़वहो	वाक्पति	कन्नौज के शासक यशोवर्मा का इतिहास
21.	विक्रमांकदेवचरित	बिल्हण	कल्याणी के परवर्ती चालुक्य नरेश विक्रमादित्य की उपलब्धियों का वर्णन
22.	रामचरित	संध्याकर नंदी	बंगाल के शासक रामपाल की जीवनकथा
23.	कुमार पाल चरित	जयसिंह	गुजरात के शासक कुमार पाल की उपलब्धियों का वर्णन
24.	द्वयाश्रय काव्य	हेमचंद्र	गुजरात के शासक कुमार पाल की उपलब्धियों का वर्णन

25.	नवसाहसांक चरित	पद्मगुप्त	परमार वंश का वर्णन
26.	पृथ्वीराज विजय	जयानक	पृथ्वीराज चौहान की उपलब्धियों का वर्णन
27.	पृथ्वीराजरासो	चंदबरदाई	पृथ्वीराज चौहान की उपलब्धियों का वर्णन
28.	प्रबंध चिंतामणि	मेरूतुंग	गुजरात के शासकों का वर्णन
29.	हम्मीर मद मर्दन	जयसिंह	गुजरात के शासकों का वर्णन
30.	राजतरंगिणी	कल्हण	कश्मीर के राजवंश की विस्तृत जानकारी मिलती है
31.	परिशिष्टपर्वन	हेमचंद्र	जैन धर्म एवं मौर्यवंश

विदेशी यात्रियों के वृत्तांत/विवरण *(Foreign Travellers' Memoirs/Description)*

प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में विदेशी यात्रियों के विवरण भारतीय लेखकों के वर्णनों की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं। परंतु यूनानी लेखक भारतीय भाषा और परिवेश से अनभिज्ञ थे, अत: उनके सभी विवरणों को पूर्णत: सत्य नहीं माना जा सकता। इसी प्रकार चीनी यात्रियों के वर्णन भी पूर्णतया सही प्रतीत नहीं होते हैं क्योंकि उनके लेखन का दृष्टिकोण मूलत: बौद्ध धर्म पर आधारित था। अलबरूनी ने भी प्राय: उपलब्ध भारतीय साहित्य के आधार पर ही वर्णन किया है, अपने अनुभव के आधार पर नहीं।

विदेशी यात्रियों के विवरण को हम तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं–

(क) यूनान और रोम के लेखक (ख) चीनी यात्रियों के विवरण (ग) अरब यात्रियों के विवरण

(क) यूनान और रोम के लेखक *(Writers from Greece and Rome):* यूनान और रोम के लेखकों में सबसे प्राचीन हेरोडोटस और टीसियस के वृत्तांत हैं। वस्तुत: इन लेखकों ने भारत के विषय में जानकारी ईरान से प्राप्त की थी। हेरोडोटस के वर्णन में कुछ उपयोगी तथ्य मिलते हैं, किंतु उनमें भी अनेक कल्पना पर आधारित कहानियाँ हैं। टीसियस के वर्णन में अधिकांशत: कल्पित कहानियाँ हैं जो पूर्णत: अविश्वसनीय हैं। इन दोनों लेखकों की अपेक्षा उन यूनानी लेखकों के विवरण विश्वसनीय हैं जो सिकंदर के साथ भारत आए थे। जैसे–नियार्कस, आनेसिक्रिटस और अरिस्टोबुलस के वर्णन। उनसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण व विश्वसनीय वर्णन मेगास्थनीज का है। मेगास्थनीज की पुस्तक इंडिका अब उपलब्ध नहीं है। यूनान और रोम के लेखकों ने इंडिका के आधार पर अपने वर्णन लिखे हैं। इन लेखकों के वर्णन बहुत उपयोगी हैं क्योंकि उन्होंने उन तथ्यों को लिखा है जिन्हें भारतीय लेखक महत्त्व नहीं देते थे। इन लेखकों के वर्णन चंद्रगुप्त के समय की राजनीतिक घटनाओं पर कम, सामाजिक रीति-रिवाजों और शासन प्रबंध पर अधिक प्रकाश डालते हैं। यूनानी लेखकों के ग्रंथों में 'पेरिपल्स ऑफ दि एरिथियन सी' का इतिहास लेखन में महत्त्वपूर्ण स्थान है किंतु इसके लेखक का नाम अज्ञात है। इसने अपने वर्णन में भारतीय बंदरगाहों के नाम तथा इनसे आयात और निर्यात की जाने वाली वस्तुओं के नाम लिखे हैं। टॉलमी ने दूसरी सदी ईसवी में भारत का भौगोलिक वर्णन लिखा है। प्लिनी ने अपना वर्णन पहली सदी ईसवी में लिखा।

(ख) चीनी यात्रियों के विवरण *(Description by Chinese Travelers):* चीनी यात्रियों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण फाह्यान, ह्वेनसांग और इत्सिंग के वर्णन हैं। इनके वर्णन चीनी भाषा में अभी तक उपलब्ध हैं तथा इनके अंग्रेज़ी अनुवाद कर दिये गए हैं। फाह्यान 5वीं शती ईसवी में भारत आया था और 14 वर्ष भारत में रहा तथा उसने विशेष रूप से भारत में बौद्ध धर्म की स्थिति के विषय में लिखा। ह्वेनसांग हर्ष के शासनकाल में भारत आया था और वह 16 वर्ष भारत में रहा। उसने धार्मिक अवस्था के साथ-साथ तत्कालीन राजनीतिक दशा का भी वर्णन किया है तथा उसने हर्ष, भास्कर वर्मन आदि के विषय में लिखा है। किंतु इनका दृष्टिकोण ज़्यादातर धार्मिक ही था, जिसका इनके वर्णन पर स्पष्टत: प्रभाव दिखाई पड़ता है।

(ग) अरब यात्रियों के विवरण *(Description by Arabian Travelers):* अरब यात्रियों ने लगभग 8वीं शताब्दी से भारत के विषय में वर्णन करना शुरू कर दिया था। सुलैमान 9वीं शती ईसवी के मध्य भारत आया था तथा इसने पाल और प्रतिहार राजाओं के विषय में लिखा है। अल मसूदी 941 ई. से 943 ई. तक भारत में रहा। उसने राष्ट्रकूट राजाओं की महत्ता के विषय में लिखा है। अरब यात्रियों के विवरण में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान अबूरिहान का है। उसका दूसरा

नाम अलबरूनी था। वह महमूद गजनवी का समकालीन था। उसने संस्कृत भाषा सीखी और भारत की सभ्यता एवं संस्कृति को पूर्ण रूप से जानने का प्रयत्न किया। उसका महत्त्वपूर्ण ग्रंथ तहकीक-उल-हिंद है और इसमें भारत का बहुत तर्कसंगत और पूर्ण वर्णन लिखा है। अलबरूनी ने भारतीय गणित, भौतिकी, रसायनशास्त्र, सृष्टिशास्त्र, ज्योतिष, भूगोल, दर्शन, धार्मिक क्रियाओं, रीति-रिवाजों और सामाजिक विचारधारा का महत्त्वपूर्ण वर्णन किया है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि इतिहास लेखन में ग्रंथों, सिक्कों, अभिलेखों और पुरातत्त्व आदि से प्राप्त साक्ष्यों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक इतिहासकार काल विशेष में संबंध रखने वाली साहित्यिक तथा पुरातात्विक सामग्री का उपयोग करके सही चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। साहित्यिक स्रोतों का उपयोग करते समय वह उस काल की विचारधारा का ध्यान रखता है जिससे प्रेरित होकर लेखक ने अपने ग्रंथों की रचना की थी।

अभ्यास हेतु प्रश्न

1. भारतीय इतिहास को जानने के साधनों में सम्मिलित तत्त्व है/हैं–
   1. पुरातत्त्व-संबंधी साक्ष्य
   2. साहित्यिक साक्ष्य
   3. विदेशी यात्रियों के विवरण

   कूट:
   (a) 1 और 2 (b) 2 और 3
   (c) 1 और 3 (d) 1, 2 और 3
2. भारतीय इतिहास का अध्ययन करने में पुरातात्विक स्रोत का विशेष महत्त्व है, क्योंकि–
   1. भारतीय इतिहास से संबद्ध ग्रंथों का रचना-काल स्पष्ट नहीं है, इसलिये उनसे किसी काल विशेष की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता है।
   2. साहित्यिक साक्ष्यों का दृष्टिकोण भी इतिहास का पूर्णत: सही वर्णन करने में अस्पष्ट है।
   3. ग्रंथों की प्रतिलिपि करने वालों ने भी अपनी इच्छानुसार अनेक विद्यमान महत्त्वपूर्ण तथ्यों को छोड़कर नए तथ्य जोड़ दिये।

   कूट:
   (a) 1 और 2 (b) 2 और 3
   (c) 1 और 3 (d) 1, 2 और 3
3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
   1. प्राचीन भारतीय इतिहास के संदर्भ में सबसे प्राचीन अभिलेखों में मध्य एशिया के बोगजकोई से प्राप्त अभिलेख हैं, जिन पर वैदिक देवता के नाम मिलते हैं।
   2. भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख चन्द्रगुप्त मौर्य के हैं।

   उपरोक्त कथनों में कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2
4. निम्नलिखित कथनों में कौन-सा असत्य है?
   (a) मध्य एशिया के बोगज़कोई से प्राप्त अभिलेख लगभग 1400 ई.पू. का है।
   (b) बोगज़कोई अभिलेख से ऋग्वेद की तिथि ज्ञात करने में सहायता मिलती है।
   (c) अशोक के सभी अभिलेख खरोष्ठी लिपि में हैं।
   (d) मास्की तथा गुर्जरा से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है।
5. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये।

सूची-I (अभिलेख)	**सूची-II (शासक)**
A. हाथीगुम्फा अभिलेख	1. गौतमी बलश्री
B. नासिक अभिलेख	2. स्कंदगुप्त
C. भितरी स्तंभ लेख	3. खारवेल
D. ऐहोल अभिलेख	4. पुलकेशिन द्वितीय

कूट:

	A	B	C	D
(a)	1	2	4	3
(b)	3	1	2	4
(c)	2	3	1	4
(d)	1	2	3	4

6. भारतीय इतिहास के पुरातात्विक साक्ष्य के संबंध में सुमेलित कथन है/हैं–
   1. कुछ अभिलेख पाषाण या स्तंभों पर खुदे हैं तथा उनके प्राप्ति स्थलों में उस शासक के राज्य की सीमाओं का भी अनुमान लगाया जा सकता है।
   2. सभी उत्कीर्ण अभिलेखों पर उनकी तिथि अंकित नहीं है, फिर भी अक्षरों की बनावट के आधार पर उनका समय मोटे तौर पर निर्धारित हो जाता है।

   उपरोक्त कथनों में कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2
7. ब्राह्मी लिपि को सर्वप्रथम किस विद्वान ने पढ़ा था?
   (a) दयाराम साहनी (b) राखालदास बनर्जी
   (c) जेम्स प्रिंसेप (d) माधवस्वरूप वत्स
8. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
   1. गुप्तकाल से पहले के अधिकतर अभिलेख प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध हैं और उनमें ब्राह्मणेतर धार्मिक समुदायों का उल्लेख है।
   2. गुप्त और गुप्तोत्तर काल के अधिकतर अभिलेख संस्कृत भाषा में हैं और उनमें ब्राह्मण धर्म का विशेष उल्लेख है।

   उपरोक्त कथनों में कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2
9. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
   1. दक्षिण भारत के पल्लव, चालुक्य, राष्ट्रकूट, पांड्य और चोल वंशों का इतिहास लिखने में यहाँ के शासकों के अभिलेख बहुत अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं हुए हैं।
   2. उत्तर भारत के मंदिरों की कला-शैली 'नागर शैली' का उदाहरण है।

   उपरोक्त कथनों में कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2
10. निम्नलिखित में कौन-सा कथन असत्य है?
   (a) सिक्कों के अध्ययन को 'न्यूमिस्मेटिक्स' कहते हैं।
   (b) हड़प्पा काल में धातु मुद्रा की जगह मुहरों और मनकों का प्रचलन था जिससे व्यापार प्रणाली संचालित होती थी।
   (c) जावा का प्रसिद्ध स्मारक 'बोरोबुदूर' इस बात का प्रमाण है कि 9वीं शताब्दी में वहाँ बौद्ध धर्म अतिलोकप्रिय हो गया था।
   (d) चालुक्य, राष्ट्रकूट, प्रतिहार और पल्लव वंश के शासकों के सिक्के बहुतायत में मिले हैं।
11. निम्न में कौन-सा सुमेलित नहीं है?
   (a) मुद्राराक्षस – विशाखदत्त
   (b) राजतरंगिणी – पाणिनि
   (c) हर्षचरित – बाणभट्ट
   (d) रघुवंशम् – कालिदास
12. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये–

सूची-I (रचना)	**सूची-II (रचनाकार)**
A. अर्थशास्त्र	1. चंदबरदाई
B. विक्रमांकदेवचरित	2. कौटिल्य
C. पृथ्वीराजरासो	3. बिल्हण
D. परिशिष्टपर्वन	4. हेमचंद्र

   कूट:

	A	B	C	D
(a)	2	4	1	3
(b)	2	1	3	4
(c)	2	3	4	1
(d)	2	3	1	4

13. नीतिसार के रचनाकार कौन हैं?
   (a) कालिदास (b) कामंदक
   (c) कल्हण (d) वाक्पति
14. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
   1. प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में विदेशी यात्रियों के विवरण भारतीय लेखकों के वर्णनों की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं।
   2. अलबरूनी ने अधिकांश वर्णन उपलब्ध भारतीय साहित्य के आधार पर किया है, अपने अनुभव के आधार पर नहीं।

   उपरोक्त कथनों में कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2
15. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
   1. यूनान और रोम के लेखकों में सबसे प्राचीन हेरोडोटस और टीसियस के वृत्तांत हैं।
   2. फाह्यान और ह्वेनसांग अरब के यात्री थे, जो गजनवी के साथ भारत आए थे।

   उपरोक्त कथनों में कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2